country. If the area to be covered is large, naturally, the number of drillings would be larger, and, therefore, the implication of foreign exchange liability will be much larger.

Shri Hem Barua: In view of the fact that the Oil and Natural Gas Commission and certain other parties are engaged in drilling work in this country, why is it that new parties are invited, and thus the scope of drilling by other parties is being extended?

Shri K. D. Malaviya: We want to finish larger quantity of work in smaller time.

Shri P. C. Borooah: What is the total area covered by the operations of the Italian firm, and by what time is the operation likely to be completed?

Shri K. D. Malaviya: The operation has not yet begun.

Shri Bhagwat Jha Azad: May I know whether any time-schedule has been given, and the Oil and Natural Gas Commission has given its choice about the areas, and if so, by what time it is proposed to start the work?

Shri K. D. Malaviya: As I have said, the areas specified by the Oil and Natural Gas Commission are the Gangetic basin, certain areas of Bihar and U.P. and also some other areas about which a final decision has not yet been taken. But these two areas have been decided upon, and a number of wells will be located by the Oil and Natural Gas Commission; the sites will be located upon which they will be required to drill.

दिल्ली में हत्यायें तथा अन्य अपराध

+

*४८०. **श्री म० ला० द्विवेदी :**
श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री रामेश्वरानंद :
डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी :
श्री रघुनाथ सिंह :
श्री यशपाल सिंह :
श्री दलजीत सिंह :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान दिल्ली में बढ़ती हुई हत्याओं तथा अन्य अपराधों की ओर दिलाया गया है ;

(ख) दिल्ली में जनवरी १९६० से अब तक हत्या, हत्या के प्रयत्नों तथा घातक प्रहारों के कुल कितने मामले हुये ; और

(ग) क्या सरकार का विचार इन अपराधों को रोकने के लिए कोई दृढ़ कदम उठाने का है और यदि हां, तो क्या तथा कब से ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार): (क) पिछले वर्ष की तत्सम् अवधि की अपेक्षा इस वर्ष कुल संज्ञेय (cognisable) अपराधों तथा हत्याओं की संख्या में कुछ बढ़ोतरी हुई है ।

(ख) हत्याएं १५५

हत्या तथा घातक चोट पहुंचाने के प्रयत्न } १-१-६० से ३१-७-६२ तक १००

(ग) बढ़ी हुई गश्तों तथा सतर्कता के अतिरिक्त जन संख्या तथा दर्ज किए गए अपराधों आदि पर आधारित वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार पुलिस को सशक्त बनाने तथा पुलिस की कार्य क्षमता को सुधारने के प्रस्ताव विचाराधीन हैं । इन प्रस्तावों पर शीघ्र विचार किया जा रहा है ।

Shri Hari Vishnu Kamath: May I request that this question might be taken up along with a similar unstarred question? It is an unusual request, but it is due to no fault of mine. I gave notice of a similar starred question, but it has been put in the

unstarred list. The quesion is the same and relates to crimes in Delhi.

Mr. Speaker: I shall give an opportunity to the hon. Member to put supplementaries.

Shri Hari Vishnu Kamath: Why should the starred question which I had given notice of appear in the unstarred list? I am asking this of you, on a point of order. The same question which I had given notice of is in the unstarred list.

Shri Tyagi: What does it matter? The hon. Member's purpose has been served.

Mr. Speaker: I can look into it afterwards, but now I shall give an opportunity to the hon. Member to ask supplementaries.

श्री म० ला० द्विवेदी : पहले दिल्ली की आबादी केवल ढाई लाख थी, जब कि अब वह २६ लाख से अधिक है । मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या अब तक इसी अनुपात में दिल्ली की पुलिस में वृद्धि हुई है ; यदि नहीं, तो क्यों नहीं और अब जो वृद्धि की जा रही है, वह कितनी की जा रही है ।

गृह-कार्य मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री) : यह ठीक है कि जितनी आबादी बढ़ी है, उस की ज़रूरत के हिसाब से पुलिस की ताकत या पुलिस की संख्या उतनी नहीं बढ़ी है । सच बात यह है कि मेरा अनुमान यह था कि पुलिस की संख्या दिल्ली में बहुत काफी है । मेरा अपना ख्याल यह रहता था कि बमुकाबल और शहरों के दिल्ली को पुलिस ज्यादा मिली है । लेकिन मैंने अभी जो कांफ्रेंस की, उस से यह अन्दाजा मिला कि मेरा अनुमान ठीक नहीं था । इस बात की ज़रूरत है कि पुलिस की स्ट्रैंथ को, ताकत को बढ़ाया जाय ।

श्री म० ला० द्विवेदी : क्या मैं पूछ सकता हूं कि पुलिस के अधिकारियों की दक्षता के संबन्ध में मंत्री महोदय की क्या राय है, क्योंकि इस बीच में जो क्राइम्ज़ हुए हैं, उन की जांचपड़ताल भी ठीक नहीं हुई है और केसिज़ भी कम पकड़े गए ? मैं यह भी जानना चाहता हूं कि कितने परसेंट केसिज़ पकड़े गये और कितनों को सज़ा हुई ।

श्री लाल बहादुर शास्त्री : संख्या तो खैर मैं इस वक्त बतला सकता हूं । लेकिन जहां तक उन की दक्षता या कार्वलियत की बात है, वह तो मैं नहीं कह सकता कि वे बहुत अच्छे हैं, मगर यह कहना भी ठीक नहीं होगा कि सब बहुत कमज़ोर हैं । काफ़ी अफ़सर अच्छे हैं और कुछ में कमज़ोरियां हैं । लेकिन एक बात में बड़ी कमी रही है और वह यह है कि दिल्ली में जो हमारे सब-इंस्पैक्टर्ज का लेवल है, वह बहुत कमज़ोर है—कमज़ोर के मायने ये हैं कि जो सब-इंस्पैक्टर्ज हैं, व अक्सर प्रोमोटिड हैं, यानी वे हैड-कांस्टेबल थे, या कांरुटेक्न थे और असिस्टेंट सब-इंस्पैक्टर ए । तो वह एक बहुत बड़ी कमी रही है और अब हम उस को सुधारने की कोशिश कर रहे हैं । जब तक सब-इंस्पैक्टर्ज का लवल कुछ और ऊंचा नहीं होगा, तब तक जांच-पड़ताल में यह कमज़ोरी रहेगी ।

श्री रामेश्वरानन्द : मैं गृह मंत्री से यह जानना चाहूंगा कि वह कहते हैं कि हमारे अफ़सर बहुत अच्छे हैं, नीचे वाले ऐसे हैं, नीचे वाले वैसे हैं, अफ़सर बढ़िया हैं, (*Interruptions*). जो भी हों.....

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य ऐसे वैसे को छोड़ कर सवाल करें ।

श्री रामेश्वरानन्द : मैं सवाल कर रहा हूं ।

माननीय मंत्री जी ने कहा है कि उन के अफ़सर अच्छे हैं और दूसरे लोग ऐसे हैं, वैसे हैं, परन्तु किस लिए भरा हुआ है या गोबर, इस की क्या आवश्यकता है, जब वे सुरक्षा के लिए प्रबन्ध नहीं कर सकते? यहां पर दिल्ली में होने वाले अपराधों का उल्लेख किया गया है, परन्तु देहातों में तो आये वर्ष अपराधों की संख्या में वृद्धि हो रही है–जिले जिल में किसी वक्त पांच अपराध होत थे, अब वहां १५ हो गए हैं । इस लिए मैं यह जानना चाहता हूं कि

क्या मंत्री महोदय कभी इस दुख को दूर भी कर सकेंगे या यह कोशिश ही कोशिश रहेगी।

अध्यक्ष महोदय : श्री पाण्डेय

श्री रा० शि० पाण्डेय : गुण्डा एक्ट के अन्तर्गत जो व्यक्ति दूसरे प्रान्तों से निकाल दिये जाते हैं, वे यहां आ कर बस जाते हैं। क्या मैं जान सकता हूं कि क्या सरकार को यह खबर है और अगर है, तो उस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गई ।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य तो मर्डर्ज और दूसरे एफिलिएटिड जर्मों से अब गुण्डों पर चले गए हैं।

श्री बनर्जी।

श्री स० मो० बनर्जी : क्या मंत्री महोदय के ध्यान में यह बात आई है कि २५ मई, १९६२ और ३१ जुलाई, १९६२ को कुछ नौकरों ने ज़हर मिला दिया और ज़हर मिला देने के बाद कुछ लोग मर गए और जब उन नौकरों को पकड़ा गया, तो पुलिस ने उन को छोड़ दिया? मैं श्री टीकमदास गुगलानी की डैथ के बारे में पूछ रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : मैं इंडिविडुअल केसिज के लिए कैसे इजाजत दे सकता हूं?

श्री स० मो० बनर्जी : मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या ऐसे केसिज आए हैं?

अध्यक्ष महोदय : श्री शास्त्री ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : दिल्ली भारत की राजधानी है और भारत की राजधानी के सम्बन्ध में गृह मंत्री महोदय ने जो अभी विवरण दिया है, उससे वह भी सन्तुष्ट नहीं हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि हत्यायें, डाके, चोरी और अपहरण आदि जैसे कांडों को देखते हुए तथा स्थिति की भयंकरता का अनुमान लगाते हुए इस सम्बन्ध में संतोषजनक पग उठाने के लिए क्या गृह मंत्रालय ने कोई विशेष कार्यक्रम बनाया है; यदि हां, तो उसका विवरण क्या है?

श्री लाल बहादुर शास्त्री : माननीय सदस्य को हमारी कठिनाई का भी थोड़ा अनुभव करना चाहिए। दिल्ली में जिस तरह पुलिस फोर्स बनी है, उसका थोड़ा बहुत अन्दाज़ा शायद उन्हें हो। काफी बाहर के लोग और पंजाब के काम करने वाले आए, जिनको भर्ती करना पड़ा और, जैसा कि मैंने कहा है, उसमें हम को हर लेवल के, हर दर्जे के जो वहां आफिसर थे, उनको लेना पड़ा, जिसमें हमें काफी कठिनाई और दिक्कत हुई है। एक तरफ तो उनको काम पर लगाना था और दूसरी तरफ हमको उनकी क्षमता या एफ़िशेन्सी भी देखनी थी।

दूसरी बात यह है कि यह बढ़ता हुआ शहर है और इसकी इतनी बड़ी आबादी है, इसके लिये उसमें कठिनाइयां पड़ी हैं। लेकिन मैं नहीं समझता कि उसको सुधारने की तरफ हमारा ध्यान नहीं है। अभी हाल में पार्लियामेंट के मिलने से थोड़े दिन पहले मैं ने इंस्पैक्टर जनरल, डी० आई० जी और डिप्टी कमिश्नर की मीटिंग बुलाई, जिसमे उन प्रश्नों पर विचार किया गया, जो कि माननीय सदस्य यहां पर उठा रहे हैं। हम कई ऐसे कदम उठाने जा रहे हैं, कई ऐसी बातें करने जा रहे हैं, जिस से पुलिस की क्षमता बढ़ाई जाएगी। खास तौर से, जैसा कि मैंने कहा है, सब-इंस्पैक्टर्ज और दूसरे ऊंचे अफ़सरों को सुधारने के बारे में क़दम उठाए जाएंगे।

जहां तक उनकी माबिलिटी का ताल्लुक है, अब हालत यह है कि ट्रांसपोर्ट की गाड़ियां पुरानी पड़ी हुई हैं, टूटी हुई हैं या खराब हैं। अभी चार पांच ही रोज पहले उनको करीब बारह जीप्स या स्टेशन वैगन्ज़ आदि दी गई हैं। हमने माबिलिटी को बढ़ाने, और सैंटर खोलने और नए थाने खोलने पर विचार किया हैं और उसके मुताबिक हम काम करेंगे।

श्री यशपाल सिंह : क्या मैं जान सकता हूं .....

अध्यक्ष महोदय : नैक्स्ट क्वैस्टियन ।

Shri Hari Vishnu Kamath: You promised to give me a chance for supplementaries.

अध्यक्ष महोदय : मिनिस्टर साहब ने काफी लम्बा और डिटेल्ड स्टेटमेंट दिया है । अब काफी हो गया है ।

Dr. L. M. Singhvi: Our names are in the question. We have not had a chance.

श्री यशपाल सिंह : जब कोई सदस्य सवाल लिख कर देता है, तो उसको सप्लीमेंटरीज पूछने का मौका मिलना चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय : नेक्स्ट क्वैस्टियन ।

Coal Prices

+

*481. { **Shri Rameshwar Tantia:** **Shri P. R. Chakraverti:**

Will the Minister **of Mines and Fuel** be pleased to state:

(a) whether any decision has been taken by Government to raise the coal prices; and

(b) if not, what other measures Government propose to take to provide incentive to the producers of coal?

The Minister of Mines and Fuel (Shri K. D. Malaviya): (a) Details of the increase notified with effect from 13-6-1962 are given in the statement laid on the Table of the House in reply to Starred Question No. 1516 on 18th June 1962.

(b) Besides the increase in prices already announced, the Government has liberalised the scheme of stowing assistance and is also considering the question of liberalisation of assistance to collieries handicapped by adverse conditions and grant of loans on easy terms.

Shri Rameshwar Tantia: Apart from the rise in the prices and other incentives which the hon. Minister mentioned, what has been done to solve the transport problem, which is a bottleneck in the way of increased coal production?

Shri K. D. Malaviya: The transport question is besides the price increase. This question has been specifically put with regard to increase in price.

Shri Rameshwar Tantia: After this price rise and the new incentives, may I know whether the production in the Government collieries has increased by 50 or 60 per cent?

Shri K. D. Malaviya: We expect that there will be a rise in the production of coal, and we are now working on the exact pattern of increase that is likely to result from these concessions.

श्री विभूति मिश्र : क्या यह सही है कि मंत्री जी ने कोयले की कीमत के बारे में जो नीति निर्धारित की है, उसका नतीजा यह हो रहा है कि बिहार में जिस कीमत पर कोयला मिलेगा, बम्बई में कोयला उससे सस्ते दाम पर मिलेगा ?

श्री के० दे० मालवीय : ऐसा तो मुझे नहीं मालूम पड़ता । बम्बई में कोयले का दाम बिहार से कुछ ज्यादा होगा, क्योंकि ट्रांसपोर्ट का भी दाम बढ़ जाता है ।

Shrimati Savitri Nigam: May I know if the hon. Minister is aware that apart from the irregular supplies of coal in the Capital, the quality of coal which is being supplied is very inferior and defective?

Shri K. D. Malaviya: As and when our attention is drawn to the bad quality of coal, we take necessary steps. The difficulty is that here some of the merchants are in direct contact with the collieries, and they make their own purchases, and therefore, Government are not able to find out how control on quality can be main-